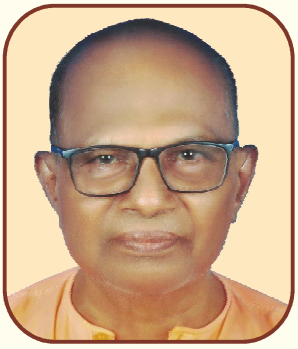

SWAMI MUNI NARAYANA PRASAD

Swami Muni Narayana Prasad is the Head and Guru of Narayana Gurukula Foundation.

2. Born on 9th December 1938, Swami Muni Narayana Prasad was a civil engineer by profession. His inclination towards spiritual/philosophical matters culminated in his resignation from PWD of the state of Kerala in 1968. After resignation, he joined Narayana Gurukulas as inmate. Narayana Gurukula was founded on 8th June, 1923 by Shri P. Natarajan, who later became Nataraja Guru. He was a direct disciple of Guru Narayana and founded Narayana Gurukula with the blessings of his Guru. It is a guru-disciple foundation according to Indian (Hindu) tradition with its headquarters at Varkala, Kerala. In addition to the 15 centers of Kerala, Narayana Gurukula has centers in Ooty and Bangalore, also in Singapore, USA and Fiji. He became the Head and Guru in 1999. He has travelled widely in India and abroad teaching Indian philosophy and was in charge of Gita Ashram, Fiji, during 1989-91.

3. Swami Muni Narayana Prasad has authored 130 books, out of which 100 are in Malayalam and 30 in English. His books are also translated into Hindi and one in Assamese too. His works reveal the dynamic nature of Indian thought. His works can be roughly classified into three groups viz. Commentaries on Upanishads and Bhagavad Gita, works related to Narayana Guru and works on general philosophical issues including popular articles.

4. Swami Muni Narayana Prasad wrote commentaries for Aitareya, lsavasya, Kena, Prasna, Mandukya, Taittiriya, Svetasvatara and Chandogya Upanishads in Malayalam and English. 'Life's Pilgrimage Through Gita' is his English commentary on Bhagavad Gita. National Book Trust of India published the book "Narayana Guru: Complete Works". His other works are commentaries on Vedanta Sutra, Darsanamala of Narayana Guru, 'The Philosophy of Narayana Guru', 'Basic Lessons on India's Wisdom', 'Pure Philosophy Simplified for Youth', 'Vedanta Up to Narayana Guru', 'Karma and Reincarnation' etc. 'Christ The Guru' interprets the Gospels of Bible through a vedantic perspective and the Malayalam book 'Allahuvinte Namathil' interprets the one hundred names of Allah, given in Quran, through the same angle. Its English version is 'In the Name of Allah'.

5. Swami Muni Narayana Prasad is the recipient of two awards of Kerala Sahitya Academy. The 'Best Translation Award' of 2015 was given to him for the translation of a commentary on Sankaracharya's *S*oundaryalahari from English to Malayalam. He was also awarded the 'best autobiography award' of 2018 for his autobiography, Atmayanam. He also received ten other awards instituted by different organizations.

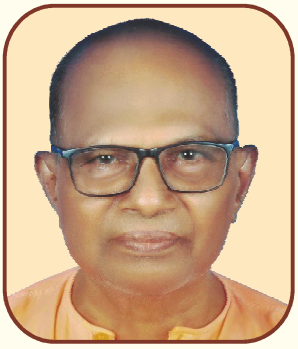

स्वामी मुनि नारायण प्रसाद

स्वामी मुनि नारायण प्रसाद, नारायण गुरुकुल फाउंडेशन के प्रमुख और गुरु हैं।

2. 9 दिसंबर 1938 को जन्मे, स्वामी मुनि नारायण प्रसाद पेशे से सिविल इंजीनियर थे। उनका झुकाव अध्यात्म/दर्शन की ओर था। अतः, उन्होंने 1968 में केरल राज्य के पीडबल्यूडी से त्यागपत्र दे दिया। त्यागपत्र के बाद, वह नारायण गुरुकुल में स्थायी सदस्य के रूप में शामिल हो गए। नारायण गुरुकुल की स्थापना 8 जून 1923 को श्री पी. नटराजन ने की थी, जो बाद में नटराज गुरु बने। वह गुरु नारायण के शिष्य थे और उन्होंने अपने गुरु के आशीर्वाद से नारायण गुरुकुल की स्थापना की थी। यह भारतीय (हिंदू) परंपरा के अनुसार एक गुरु–शिष्य फाउंडेशन है जिसका मुख्यालय वर्कला, केरल में है। केरल स्थित 15 केंद्रों के अलावा, नारायण गुरुकुल के ऊटी और बैंगलोर में तथा सिंगापुर, अमेरिका और फिजी में भी केंद्र हैं। स्वामी मुनि नारायण प्रसाद 1999 में प्रमुख और गुरु बने। उन्होंने भारतीय दर्शन के अध्यापन हेतु भारत और विदेशों में अनेक यात्राएं की हैं और वह 1989–91 के दौरान गीता आश्रम, फिजी के प्रभारी थे।

3. स्वामी मुनि नारायण प्रसाद ने 130 पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें से 100 मलयालम में और 30 अंग्रेजी में हैं। उनकी पुस्तकों का हिंदी में और एक का असमी में भी अनुवाद हुआ है। उनकी रचनाओं में भारतीय चिंतन की गतिशील प्रकृति परिलक्षित होती है। उनकी रचनाओं को सामान्यतः तीन समूहों में वर्गीकृत किया जा सकता है, अर्थात उपनिषदों और भगवद्गीता पर भाष्य, नारायण गुरु से संबंधित रचनाएं तथा लोकप्रिय आलेख और सामान्य दार्शनिक विषयों पर रचनाएं।

4. स्वामी मुनि नारायण प्रसाद ने ऐतरेय, ईशावास्य, केन, प्रश्न, मांडूक्य, तैत्तरीय, श्वेताश्वतर और छांदोग्य उपनिषद पर मलयालम और अंग्रेजी में भाष्य लिखा है। 'लाइफ्स पिलग्रिमेज थ्रू गीता' भगवद् गीता पर उनका अंग्रेजी में भाष्य है। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास ने "नारायण गुरुः सम्पूर्ण रचनाएं" पुस्तक प्रकाशित की। उनकी अन्य रचनाओं में वेदांत सूत्र पर भाष्य, नारायण गुरु की दर्शनमाला, 'नारायण गुरु का दर्शन', 'भारतीय प्रज्ञा की मूलभूत शिक्षा', 'युवाओं के लिए सरलीकृत शुद्ध दर्शन', 'नारायण गुरु तक वेदांत', 'कर्म और पुनर्जन्म' आदि शामिल हैं। 'क्राइस्ट द गुरु' में वेदांत के दृष्टिकोण से बाइबिल की शिक्षाओं की व्याख्या की गई है और मलयालम पुस्तक 'अल्लाहुविन्ते नामाथिल' में कुरान में दिए गए अल्लाह के एक सौ नामों की व्याख्या एक ही दृष्टिकोण से की गई है। इसका अंग्रेजी संस्करण 'इन द नेम ऑफ अल्लाह' है।

5. स्वामी मुनि नारायण प्रसाद को केरल साहित्य अकादमी के दो पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। शंकराचार्य की सौंदर्यलहरी पर एक भाष्य के अंग्रेजी से मलयालम में अनुवाद के लिए उन्हें 2015 का 'सर्वश्रेष्ठ अनुवाद पुरस्कार' प्रदान किया गया। उन्हें उनकी आत्मकथा आत्मायनम के लिए 2018 के 'सर्वश्रेष्ठ आत्मकथा पुरस्कार' से भी सम्मानित किया गया था। उन्हें विभिन्न संगठनों द्वारा स्थापित दस अन्य पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं।